दलित विमर्श : नाटक तथा रंगमंच
प्राचार्य डॉ. उमाकांत बिरादार
डॉ. विजयकुमार रोडे

• मूल्य : 800/- •

ISBN : 978-93-80913-16

• पुस्तक •

दलित विमर्श : नाटक तथा रंगमंच

© संपादक मंडल

• प्रधान संपादक •

प्राचार्य डॉ. उमाकांत बिरादार

डॉ. विजयकुमार रोडे

• संपादक •

डॉ. मनोहर चपळे

प्रा. धोंडिबा भुरे

प्रा. टी. घनश्याम

प्रा. कल्पना गिराम

• प्रकाशक •

दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स

प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

125/79, एल, गोविंद नगर,

कानपुर - 208 006 (उ. प्र.)

divyadistributors1@gmail.com

संस्करण : प्रथम 2015

• शब्द सज्जा •

शिखा ग्राफिक्स, कानपुर

• मुद्रक •

मधुर प्रिन्टर्स, कानपुर

DALIT VIMARSH : NATAK TATHA RANGMANCH

• Edited by •

Principal Dr. Umakant Biradar, Dr. Vijaykumar Rode

Dr. Manohar Chaple, Prof. Dhondiba Bhure, Prof. T. Ghanshyam,

Prof. Kalpana Giram

26 दलित युवक की त्रासदी और विद्रोह-'कोर्ट मार्शल'

डॉ. संतोष येरावार

वर्ण व्यवस्था के कारण भारतीय समाज में अस्पृश्यता, उच्च-निम्न और जाति-पाति गत भेदभाव का प्राबल्य बढता गया। जिसके कारण शोषण, अन्याय, अत्याचार, हिंसा, अभाव, त्रासदी दलितों के पर्यायी शब्द बन गये। सामाजिक प्रताडना के कारण दलितों का जीवन असह्य हो गया। समाज में उच्च-निम्न की खाई गहरी हो गई. परिणाम स्वरुप असंतोष, विरोध, संघर्ष और न्याय की मांग समाज के हर जागृत और संवेदनशील तबक से उठने लगी। समाज-सुधारकों नें दलितों के साथ होने वाले अन्याय के विरोध में आवाज उठाई और दलितों को न्याय देने का और उनके वास्तविक परिस्थिति का बोध समाज के तथाकथित सभ्य समाज के सामने लाने का प्रयास किया।

साहित्यकारों ने भी अपना दायित्व निभाते हुए समाज के वंचित घटकों के पक्ष में आवाज उठाई और जातीयता की जड़े कमजोर कर उसका डटकर मुकाबला किया। हिन्दी साहित्यकारों ने दलितों के साथ होनेवाले दुराचार और अनीति को साहित्य के माध्यम से वाणी प्रदान की। दलितों को उनकी वास्तविकता की पहचान कराने का प्रयास किया। वंचित और शोषित वर्ग को सचेत, जागृत, आत्मनिर्भर, और निड़र बनाने का प्रयास साहित्य के माध्यम से किया जाने लगा। उपन्यास, कहानी, आत्मकथा, नाटक आदि साहित्य विधाओं में दलित वर्ग की पीड़ा को प्रखरता से उघाडा गया। हिन्दी साहित्य ने जनवादी साहित्य का निर्माण किया। परंपरागत विचारों को नकारते हुए नए दृष्टिकोण को अपनाया जिसके कारण नयीभावभूमि, नयी धरती, नयी विचारधारा, और नये मूल्यों को साहित्य में स्थान प्राप्त हुआ। दलित साहित्य विशिष्ट जाति से जुडा न होकर सर्वहारा वर्ग, किसान, मजदूर, अछूत, अनुसूचित जाति, जनजाति, नारी, आदि वर्ग से जुडा है जो उच्च समाज और उनके द्वारा प्रचलित व्यवस्था द्वारा कुचले गये हैं।

हिन्दी नाटककारों ने भी अपनी लेखनी के माध्यम सें दलितवर्ग की त्रासदी और पीडा को उघाडा। 'स्वदेश दीपक' का 'कोर्ट मार्शल' नाटक दलितों की पीडा, त्रासदी, संत्रास, वेदना और अभाव को उजागर करनेवाला नाटक है। कानून और संविधान ने सबको समान अधिकार और दर्जा देने के बावजूद समाज में दलितों के साथ असमानता का व्यवहार किस प्रकार किया जाता है और आज भी उच्च वर्ग के मन में निम्न वर्ग के प्रति किस प्रकार जहर, विरोध और घृणा है इसका यथार्थ चित्रण स्वदेश दीपक ने कोर्ट मार्शल नाटक में किया है। कैप्टन बी.डी. कपूर द्वेष, तिरस्कार और अहंकार से भरा हुआ संकुचित मानसिकतावाला व्यक्ती है, जो रामचंदर को निरतंर प्रताडित करता रहता है।

अपमान और जहालत पूर्ण नीच व्यवहार बी.डी. कपूर की आदत बन जाती है परिणाम स्वरुप रामचंदर घूट-घूटकर जीने को मजबूर हो जाता है। जाति विषयक गंदी-गंदी गाली देकर प्रताडित किया जाता है, जिसके परिणाम स्वरुप रामचंदर की सहनशीलता की मर्यादा टूट जाती है। कर्तव्यदक्ष, इमानदार और मुस्तेद रामचंदर हत्यार उठाने के लिए मजबूर हो जाता है और बी.डी. कपूर तथा कैप्टन मोहन वर्मा पर रायफल से गोली चला देता है जिसमें कैप्टन मोहन वर्मा की जगह पर ही मौत हो जाती है और बी.डी.कपूर गंभीर रुप से घायल हो जाता है।

'कोर्ट मार्शल' नाटक में बी.डी. कपूर के माध्यमसे दलित वर्ग के प्रति उच्च जाति की घिनौनी और विकृत मानसिकता को उघाडा गया है। 'रामचंदर' यह अत्यंत बीमारी की अवस्था में डॉ. गुप्ता के पास आता है तो बी.डी. कपूर कहते है, 'हरामी रामचंदर बीमारी का बहाना कर रहा है।'[1] निम्न जाति को गाली गलोच करना और नीच समझना यह अधिकतर उच्च वर्ग की मानसिकता है।

अनादी काल से चली आ रही निम्न जाति के शोषण और अन्याय की मानसिकता आजादी के इतने वर्षो बाद भी अनेको मष्तिष्कों में पनाह लिये हुई है। बी.डी. कपूर शराब पीने के कारण रामचंदर से रेजीमेंट की दौड हार जाता है और बदला लेने के लिए रामचंदर को अपना सेवादार बना लेता है ताकि वह दौड का अभ्यास न कर सके और उसे अपमानित किया जा सके। नियमों को तोडकर बी.डी. कपूर उसे घर के काम करवाता है, सरकारी अनाज खूले बाजार में बेचना, यहाँ तक कपडे भी धोने का कार्य राम चंदर को करना पडता है। परंतु वरिष्ठ अधिकारी उच्च वर्ग के अफसरों पर कार्रवाई नहीं करते और निम्न जाति के कर्मचारी को प्रताडित करते रहते है, बिकाश राय कहता है, 'नियम और कानून केवल छोठे और कमजोर लोगों के लिए होते हैं, कहाँ मानते है रुल्ज को बडे और ताकतवर लोग... आप तो अपने से छोटों के खिलाफ एक्शन ले सकते है।'[2] न्यायव्यवस्था, अर्थव्यवस्था, धर्मव्यवस्था,

समाजव्यवस्था, और राजकीय व्यवस्था ने सदैव निम्न वर्ग से भेदभाव किया है।

बी. डी. कपूर रामचंदर को अपमानित करने की दृष्टि से और अपने आप को श्रेष्ठ और ऊँचा साबित करने के लिए चूहडा और भंगी कहकर पुकारते थे। सबके सामने रामचंदर को 'टट्टी' साफ करने को कहा गया मना करने पर कपूर ने कहा , 'जात का चूहडा और टट्टी उठाने में शर्म आती है ! तुम्हारे पुरखे पुश्तों से हम लोगों की टट्टी की टोकरी सिर पर उठा रहे है।'[3] वर्णव्यवस्था के कारण निम्न जाति को उच्च जाति व्दारा हिनभाव, घृणा, और दासता की दृष्टि से देखा गया है। मानवता जाति-पाति के जंजीर में जकडने के कारण निम्न जाति के हिस्से में शोषण, अन्याय और दु:ख ही आया है। 'स्वदेश दीपक' ने उच्च वर्ग की कुंठित और दमित मानसिकता को बी.डी. कपूर के माध्यम से उघाडा है।

कैप्टन कपूर को निम्न-जाति के लोग समाज और व्यवस्था में लगी घून के समान लगते है। निम्न जाति के कारण ही आर्मी का डिसीप्लीन बिगड गया है ऐसा कपूर का मानना है, जो उनकी संकुचित मानसिकता और निम्न जाति के प्रति घृणा के भाव को दर्शाता है।, 'अब खानदानी लोग फौज में भरती नहीं होते नीच जाति के लोगों को भरती किया जाएगा तो यही होगा। बात-बात पर शिकायत और शैमिंग। इसीलिए इंडियन आर्मी का डिसिप्लेन ...'[4] अपने आप को खानदानी समझने वाले उच्च जाति के कपूर का व्यवहार देखा जाए तो मानवता को भी शर्म आ जाए। सरकारी अनाज बेचना, शराब के नशे मे अपने पत्नी को वेश्या कहना, गाली-गलोच करना, बिस्तरपर साथ सोने को मजबूर करना, पत्नी को मारना, विवाह को रेप का लायसन्स समझना यह सोच उच्च जाति के कपूर की है।

व्यक्ति चरित्र, आचरण और विचारों से छोटा बडा होता है, पंरतु भारतीय समाज व्यवस्था में जाति के आधार पर व्यक्ति को छोटा-बड़ा, ऊँच-नीच बनाया गया है। जाति-पाति ने सदैव मानवता और कर्म को बौना साबित किया है। जाति के आधार पर व्यक्ती को मान सम्मान और प्रतिष्ठा देना यह समाज व्यवस्था के खोखलेपन और ढकोसले को दर्शाता है। निम्न जाति के लोगों के प्रति घृणा और विरोध का भाव आज भी जनमानस में पल बढ रहा है। संविधान, कानून में जो समानता, बंधुता और स्वातंत्र्य है वह वास्तविक समाज व्यवस्था में नहीं है इस तथ्य और वास्तविकता को नकारा नहीं जा सकता स्वदेश दीपक ने इसी तथ्य को उजागर किया है , 'कानून और संविधान ने सबको बराबर का दर्जा, बराबर का अधिकार दे दिया। लेकिन बडे आदमी ने छोटे आदमी को, यह अधिकार नहीं दिया। बिल्कुल नहीं दिया। जो व्यवस्था, जो समाज जाति-भेद के आधार पर चलेगा, उँच-नीच के तराजू में आदमी को तोलेगा, उसकी आयु कभी भी लंबी नहीं होती। बिल्कुल नहीं होती। बराबर की बात तो दूर, सोचने के स्तर पर भी हम अपने से 'छोटे' को बराबर का अधिकार देने के लिए

तैयार नहीं । हम तो आँख उठाकर अपनी ओर देखने का हक तक देने को तयार नहीं। इसका कारण । वे सामंती प्रवृतियाँ, सामंती सोच फ्यूडल टेंडेंसीज, जिनसे हमें अभी तक आजादी नहीं मिली ।"[७] स्वदेश दीपक ने उच्च जाति की निम्न जाति के प्रति सामंती मानसिकता को और समाज की वास्तविकता को उघाडा है । उच्च जाति ने बराबर का अधिकार तो छोडो उस दृष्टी से सोचा तक नहीं है । यही हमारे सभ्य समाज की विडंबना है।

खानदानी घमंड और अहम् आहत होने के कारण कैप्टन कपूर रामचंदर को चूहडा, चमार कहकर प्रताडित करते रंग देखकर 'चिट्टा चूहडा' पुकारते । रामचंदर जब गार्ड ड्यूटी पर होता तो गाडी रोककर गंदी - गंदी गाली गलोच करते हत्यावाले दिन कपूर कहता है- "चिट्टे चूहडे ! हराम की सट्ट ! तेरी माँ जरुर किसी कपूर या वर्मा के साथ सोई होगी।" इस तरह की भाषा का प्रयोग कर वर्मा और कपूर रामचंदर को बार-बार अपमानित करते थे। जिस कारण रामचंदर के सहनशीलता का बांध टूट जाता है और वह अपमान सहन न होने के कारण मजबुरन हत्यारा बन जाता है ।

'कोर्ट मार्शल' नाटक में स्वदेश दीपक ने रामचंदर के माध्यम सें समाज को सचेत किया है कि शोषण अन्याय, अपमान, जब अपनी मर्यादा लांघता है, तो विद्रोह, विरोध और संघर्ष जन्म लेता है । वर्णव्यवस्था,धर्म व्यवस्था, समाजव्यवस्था के प्रति विद्रोह नई परिवर्तन की दिशा का निर्माण करता है समाज मे सकारात्मक परिवर्तन लाने का कार्य निरंतर साहित्य करता आ रहा है और करेगा ।

दलित युवक के पीडा की सशक्त अभिव्यक्ति कोर्ट मार्शल नाटक में है । शोषित, पीडित, प्रताडित, उपेक्षित युवक की त्रासद गाथा यह नाटक है । 'स्वदेश दीपक' ने दीन.दलितों, दु:खी और वंचित वर्ग का पक्ष लिया है और उनकी वास्तविकता को उघाडने का ईमानदारी से प्रयास किया है । अन्याय, शोषण, और तिरस्कार की परम्परा के विरोध में संघर्ष करता रामचंदर मानवीय समानता, मूल्यों और अधिकारों की स्थापना के लिए प्रयत्न रत है । रामचंदर का विरोध, क्षोभ, पीडा, कुण्ठा, निराशा और प्रताडना विद्रोहात्मक रुप धारण करती है और एक ईमानदार, सत्य का पालन करनेवाला, कर्तव्यदक्ष और सशक्त युवक हत्यार उठाने को बाध्य हो जाता है । धर्मव्यवस्था और वर्णव्यवस्था के कारण निम्न जाति को घृणा और दासता की दृष्टि से देखा जाने लगा, जिसके कारण मानवता, दया, धर्म और प्रेम जाति-पाति के जंजीर में जखड गया । स्वदेश दीपक ने उच्च जाति की निम्न जाति के प्रति सामंती मानसिकता को उघाडा है । न्यायव्यवस्था, अर्थव्यवस्था, धर्म व्यवस्था, समाज व्यवस्था और राजकीय व्यवस्था ने सदैव निम्नवर्ग से भेदभाव पूर्ण रवैय्या आपनाया है। समाज के खोखलेपन को और घमंड को स्वदेश दीपक ने बी. डी. कपूर और कॅप्टन वर्मा के माध्यम

से उजागर किया है। संविधान और कानून में जो समता, बंधुता और स्वातंत्र्य है वह स्वातंत्र्य और समता वास्तव में नहीं है इस तथ्य को स्वदेश दीपक ने उजागर किया है। रामचंदर की त्रासदी और उच्च जाति की घिनौनी और कुंठित मानसिकता के प्रति रामचंदर के विद्रोह को अत्यंत्य सजीवता और यथार्थता के साथ उघाडा है। जाति-पाँती की बढती गहराई और परस्पर विरोध यह संघर्ष, क्रांति और व्रिदोह को जन्म देता है। रामचंदर की बेबसी आक्रोश पाकर किस प्रकार ज्वाला बनती है इस वास्तविकता को स्वदेश दीपक ने उघाडा है।

संदर्भ :

1) कोर्ट मार्शल, स्वदेश दीपक - पृ. 53

2) वही - पृ. 76

3) वही - पृ.78

4) वही - पृ. 82

5) वही - पृ. 92

6) वही - पृ. 89.